पाठ-4

मूर्ख रामू

विश्वास ध्यान आश्चर्य मामूली ग्राहक

रामू उस दिन सोकर उठा तो उसे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि उसकी मुर्गी के पास एक सोने का अंडा पड़ा है। उसे विश्वास नहीं हुआ कि यह सोने का अंडा उसी की मुर्गी का है। उसने ध्यान से अपनी मुर्गी को देखा, पर मुर्गी में उसे कोई खास बात दिखाई नहीं दी। उसने चुपचाप अंडा उठाया और अपनी अलमारी में रख दिया।

अगले दिन सुबह उसने देखा कि उसकी मुर्गी ने फिर सोने का अंडा दिया। उसे बहुत खुशी हुई। चुपके से उसने फिर अंडा उठाया और अलमारी में रख दिया। अब उसे भरोसा हो गया कि उसकी मुर्गी मामूली नहीं है।

शाम होने पर वह दोनों अंडों को लेकर बाज़ार में सेठ बनवारीलाल की दुकान पर गया। बनवारीलाल की सोने के ज़ेवरों की बहुत बड़ी दुकान थी। जब उसने देखा कि सेठ बनवारीलाल के सामने कोई ग्राहक नहीं है तो उसने जेब से दोनों अंडे निकाले और सेठजी के सामने रख दिए। सेठजी ने अचरज से अंडों को उलट-पुलट कर देखा और पूछा, "ये तो खरे सोने के हैं। कहाँ से पाए हैं आपने ये कीमती अंडे ? मैं आपको इन अंडों के बीस हज़ार रुपये दे सकता हूँ।"

सुनकर रामू खुशी से भर उठा। उसने बीस हज़ार रुपये अपने थैले में डाले और चल दिया।

रामू रोज़ एक सोने का अंडा लेकर आता और दस हज़ार रुपये ले जाता।

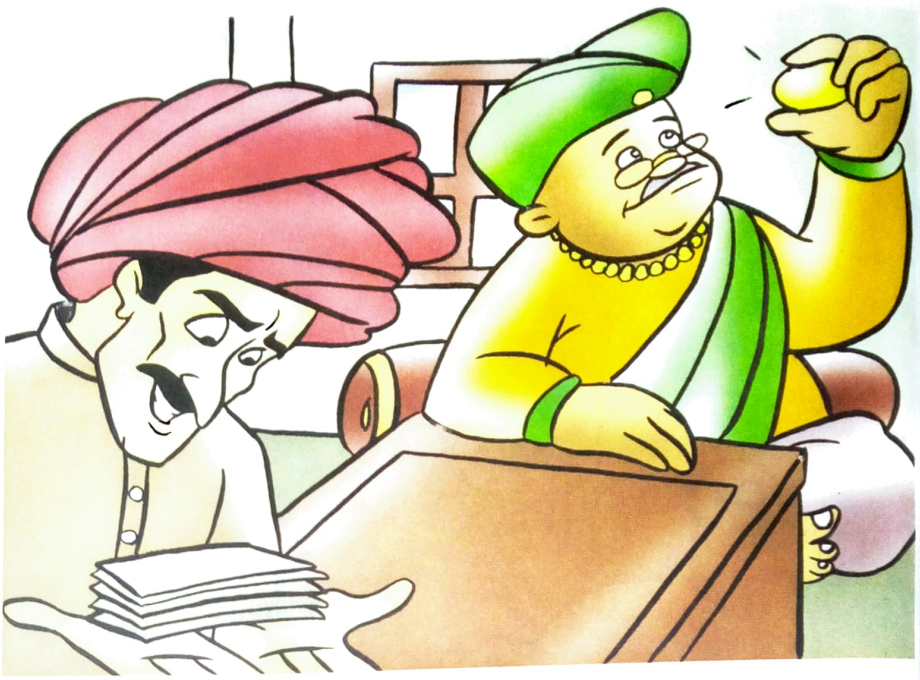

दसवें दिन रामू फिर एक अंडा लेकर सेठ बनवारीलाल के पास आया पर आज सेठजी किसी दूसरे आदमी से कई किलो सोना खरीद रहे थे। उन्होंने रामू की तरफ ध्यान नहीं दिया और कहा, "रामू, तुम कल परसों आना। आज मैं लाला सुमेरचंद से कुछ ज़रूरी बातें कर रहा हूँ।" रामू को सेठजी की यह बात अच्छी नहीं लगी। उसने सोचा कि लाला सुमेरचंद के सामने वह एक मामूली आदमी है, इसीलिए सेठ बनवारीलाल ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। उसे अपनी मुर्गी पर गुस्सा आने लगा।

वह घर आया और मुर्गी के सामने बैठकर बोला, "दुष्ट मुर्गी, तू मुझे तड़पा-तड़पाकर रोज़ एक ही अंडा क्यों देती है? एक ही साथ तू मुझे पचास-साठ अंडे क्यों नहीं दे देती?"

मुर्गी क्या बोलती! वह तेज़ी से एक तरफ चल दी। रामू को बहुत क्रोध आया। उसने दौड़कर मुर्गी को पकड़ लिया और बोला, "इसी समय मुझे चालीस-पचास सोने के अंडे दे-दे, नहीं तो मैं खुद तेरा पेट चीरकर सारे अंडे निकाल लूँगा।"

मुर्गी टुकुर-टुकुर रामू का मुँह ताकने लगी।

रामू क्रोध से भर उठा और उसने एक बड़ा-सा चाकू उठा कर मुर्गी का पेट चीर डाला। कुछ ही देर में मुर्गी तड़प-तड़प कर मर गई।

मुर्गी के पेट से कोई अंडा नहीं निकला। रामू अपनी मरी मुर्गी को देखकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। उसकी पत्नी ने उसे फटकारते हुए कहा, "अब रोने-पीटने से क्या लाभ ? जो लोग बिना सोचे-समझे इस तरह के काम करते हैं, उन्हें अंत में पछताना ही पड़ता है।"

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
आश्चर्य	हैरानी	ग्राहक	सामान खरीदने वाला
ज़ेवर	गहने, आभूषण	खरा	शुद्ध, जिसमें कोई मिलावट न हो।
विश्वास	भरोसा		

क. आओ बताएँ

1. क्या देखकर रामू को अचरज हुआ ?
2. रामू को दो अंडों की क्या कीमत मिली ?
3. दसवें दिन सेठ बनवारीलाल ने रामू की तरफ क्यों ध्यान नहीं दिया ?
4. रामू को अपनी मुर्गी पर क्यों क्रोध आने लगा ?
5. क्रोध में भरकर रामू ने क्या किया और क्यों ?

ख. आओ करें

1. गलत बात पर गलत का निशान (✗) और सही पर सही का निशान (✓) लगाओ :
   - रामू की मुर्गी कोई मामूली मुर्गी नहीं थी। (✓)
   - रामू की मुर्गी का अंडा बीस हज़ार रुपये में बिकता था। ( )

- सेठ बनवारीलाल घमंडी था, इसलिए उसने रामू की ओर ध्यान नहीं दिया।
- लाला सुमेरचंद ने ही सेठ बनवारीलाल को कहा था कि रामू जैसे मामूली आदमी से बात न करे।
- रामू मूर्ख था, इसीलिए उसने अपनी मुर्गी को मार डाला।

2. दिए गए शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो :

आश्चर्य, टुकुर-टुकुर, दुष्ट, क्रोध, तड़पना।

.....

.....

.....

.....

.....

3. नीचे दिए गए शब्दों के शुद्ध रूप लिखो-

मरगी, मूरख, विश्वस, आशचर्य, अम्डा

ग. सोचो और बताओ

किन चीज़ों को देखकर तुम्हारे मन में लालच की भावना पैदा होती है। लालच की इस भावना को तुम कैसे काबू में रख सकते हो ? सोचो और बताओ।